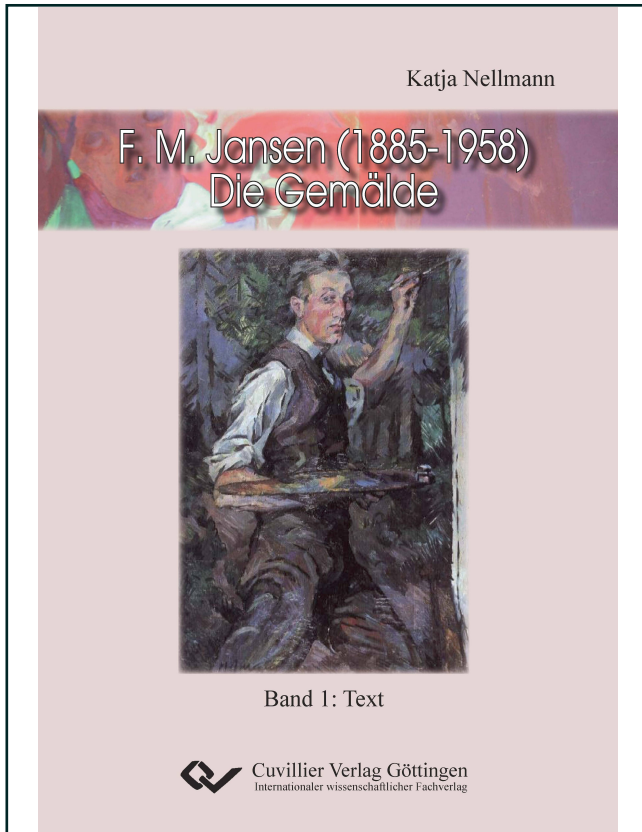




Katja Nellmann (Autor)
F. M. Jansen (1885-1958) - Die Gemälde
Band 1: Text



<https://cuvillier.de/de/shop/publications/6312>

Copyright:
Cuvillier Verlag, Inhaberin Annette Jentsch-Cuvillier, Nonnenstieg 8, 37075 Göttingen,
Germany
Telefon: +49 (0)551 54724-0, E-Mail: info@cuvillier.de, Website: <https://cuvillier.de>



Inhaltsverzeichnis

1) Text

| | | |
|-----------|---|-------|
| A. | Forschungsstand: Quellen- und Literaturbericht | S. 1 |
| B. | Franz M. Jansen – Biographie | |
| 1. | 1885-1918 | S. 6 |
| 2. | 1919-1932 | S. 16 |
| 3. | 1933-1945 | S. 25 |
| 4. | 1946-1958 | S. 38 |
| C. | Werkanalyse | S. 43 |
| 1. | 1906-1918: Kaiserzeit | |
| 1.1. | Stile und Tendenzen | S. 43 |
| 1.2. | Porträt | S. 48 |
| 1.3. | Landschaft | S. 51 |
| 1.4. | Wandbild und Figurenbild | S. 54 |
| 1.5. | Stilleben | S. 56 |
| 1.6. | Zusammenfassung | S. 56 |
| 2. | 1919-1932: Weimarer Republik | |
| 2.1. | Stile und Tendenzen | S. 57 |
| 2.2. | Landschaft | S. 61 |
| 2.2.1. | 1919-1923 | S. 62 |
| 2.2.2. | 1926-1932 | S. 63 |
| 2.2.2.1. | Flußlandschaften | S. 65 |
| 2.2.2.2. | Stadtlandschaften | S. 68 |
| 2.2.2.3. | See- und Meerlandschaften | S. 68 |
| 2.2.2.4. | Frühlingslandschaften | S. 70 |
| 2.2.2.5. | Garten- und Gebirgslandschaften | S. 70 |
| 2.3. | Porträt | S. 71 |
| 2.4. | Wandbild und Figurenbild | |
| 2.4.1. | Wandbild | S. 76 |
| 2.4.2. | Figurenbild | S. 79 |
| 2.5. | Stilleben | S. 81 |
| 2.6. | Zusammenfassung | S. 82 |
| 3. | 1933-1945:Drittes Reich | |
| 3.1. | Forschungsstand zur Kunst im Dritten Reich | S. 84 |
| 3.2. | Landschaft | S. 88 |
| 3.2.1. | Forschungsstand | S. 88 |
| 3.2.2. | Jansens Landschaftsmalerei im Dritten Reich | S. 90 |
| 3.2.2.1. | Winterlandschaften | S. 91 |
| 3.2.2.2. | Erntelandschaften | S. 93 |
| 3.2.2.3. | Waldlandschaften | S. 94 |
| 3.2.2.4. | Gebirgslandschaften | S. 95 |
| 3.2.2.5. | Industrielandschaft | S. 96 |
| 3.2.2.6. | See- Fluß- und Stadtlandschaften | S. 97 |



| | | |
|-----------|--|--------|
| 3.2.2.7. | Gartenlandschaften | S. 98 |
| 3.2.2.8. | Stimmungs-, Sommer- und Nachtlandschaften | S. 99 |
| 3.3. | Wandbild und Figurenbild | |
| 3.3.1. | <i>Wandbild</i> | S. 100 |
| 3.3.1.1. | Landschaft | S. 103 |
| 3.3.1.2. | Die sogenannte Rassenlehre | S. 104 |
| 3.3.1.3. | Bäuerlich-ländliche Lebensformen | S. 106 |
| 3.3.1.4. | Soldaten | S. 110 |
| 3.3.1.5. | Sonstige Figurengruppen | S. 112 |
| 3.3.2. | <i>Figurenbild</i> | S. 113 |
| 3.4. | Porträt | S. 114 |
| 3.5. | Zusammenfassung | S. 115 |
| 4. | 1946-1958: Nachkriegszeit | |
| 4.1. | Stile und Tendenzen | S. 118 |
| 4.2. | Figurenbild | S. 121 |
| 4.3. | Landschaft | S. 128 |
| 4.3.1. | <i>Reine Landschaften</i> | S. 130 |
| 4.3.2. | <i>Landschaften mit Figuren</i> | S. 132 |
| 4.4. | Porträt | S. 133 |
| 4.5. | Zusammenfassung | S. 133 |
| D. | Zusammenfassung: Jansens Kunst in seiner Zeit | S. 135 |

Anhang

| | | |
|-----------|---|--------|
| E. | Abkürzungsverzeichnis | S. 139 |
| F. | Verkaufsliste Jansen | S. 141 |
| G. | Reiseartikel und Reiseillustrationen Jansens für Zeitungen | S. 146 |
| H. | Ausgewählte Texte Jansens | S. 149 |
| 1. | <i>Unpubliziert</i> | |
| 1.1. | Der Schrei nach Persönlichkeit (Eine Kapuzinerpredigt) [1920] | S. 150 |
| 1.2. | Zur heutigen Lage der Kunst (wohl aus den 1920er Jahren) | S. 153 |
| 1.3. | Rheinlandschaften (wohl um 1930) | S. 153 |
| 1.4. | Selbsthilfe der Künstler (1934) | S. 154 |
| 2. | <i>Publiziert</i> | |
| 2.1. | Ein Künstler hofft wieder (1933) | S. 157 |
| 2.2. | Die Bestandsaufnahme in der Kunst (1933) | S. 158 |
| 2.3. | Wer ist Künstler? (1933) | S. 159 |
| 2.4. | Volk und Kunst (1933) | S. 160 |
| 2.5. | Stellt Aufgaben, schafft Arbeit! (1934) | S. 161 |
| 2.6. | Aufgaben des Bundes (1934) | S. 163 |
| 2.7. | Das Bild der Gemeinschaft (1935) | S. 164 |



| | | |
|-----------|---|--------|
| 2.8. | Siedeln und Wohnen auf der Kölner Frühjahrsmesse März 1936) | S. 165 |
| 2.9. | Ohne Titel (Zum Gereonsklub) [nach 1945] | S. 166 |
| I. | Ausstellungsverzeichnis | |
| 1. | <i>Einzelausstellungen</i> | S. 170 |
| 2. | <i>Gruppenausstellungen</i> | S. 172 |
| J. | Quellen | S. 181 |
| K. | Literaturverzeichnis | |
| 1. | Schriften von F. M. Jansen (chronologisch) | S. 182 |
| 2. | Forschungsliteratur und zeitgenössische Rezensionen (alphabetisch) | S. 184 |
| 3. | Kataloge (chronologisch) | |
| 3.1. | <i>Ausstellungs- und Bestandskataloge</i> | S. 203 |
| 3.2. | <i>Auktionskataloge</i> | S. 209 |
| 2) | <i>Katalog 1906-1958</i> | S. 211 |
| 3) | <i>Abbildungen zum Vergleich</i> | S. 460 |